ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५

बुलेटिन संख्या-६१
दिनांक- मंगलवार, ०१ सितम्बर, २०२०

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः ३४.५ एवं २७.१ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ८८ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ८२ प्रतिशत, हवा की औसत गति ८.० कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ३.८ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ८.३ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में ३०.६ एवं दोपहर में ३५.४ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में बरसात नहीं हुई।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(०२-०६ सितम्बर, २०२०)

- ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी ०२-०६ सितम्बर तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-
- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलो में मध्यम बादल छाये रह सकते हैं। अगले २४ घंटों के दौरान उत्तर बिहार के अनेक स्थानों पर हल्की वर्षा का अनुमान है। उसके बाद के पूर्वानुमनित अवधि में आमतौर पर मौसम शुष्क रहने की सम्भावना है ।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान ३३ से ३७ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान २६-२८ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में पूरवा हवा तथा पछिया हवा दोनों चलने का अनुमान है। औसतन ८-१० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से हवा चलने की संभावना है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ७५ से ८५ प्रतिशत तथा दोपहर में ५५ से ६५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- सितम्बर अरहर की पूसा-९ एवं शरद प्रभेद की बुआई उचॅास जमीन में करे। उत्तर बिहार के लिए यह अनुसंशित प्रभेद है। बुआई के २४ घंटे पूर्व २.५ ग्राम थीरम दवा से प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचार करे। बुआई के ठीक पहले उपचारित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करनी चाहिए।
- उरद् और मूंग की फसल में पीला मोजैक वायरस से ग्रस्त पौधों को उखार कर नष्ट कर दें। बीमार पौधों की पत्तियों पर पीले सुनहरे चकत्ते पायें जाते है एवं बीमारी की उग्र अवस्था में पूरी पत्ती पिली पड़ जाती है। पत्तियॉ आकार में छोटी हो जाती है। पुष्प एवं फलन प्रभावित हो जाती है। यह रोग सफेद मक्खी द्वारा फैलता है। रोग के विस्तार से बचाव के लिए इमिडाक्लोप्रिड एक मी०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।
- दुधारु पशुओं को जीवाणु जनित बीमारीयों से बचाने के लिए वर्षा या बाढ़ के पानी में भिंगे चारा या भूसा नहीं खिलाए। पशु के पैरों को फिटकिरी के पानी या पोटाशियम परमैगनेट के घोल से धोये। थनैला रोग से बचाव के लिए दुध दुधाई के आधे घंटे बाद तक पशुओं को बैठने न दें। दुधाई के बाद जीवाणुनाशक घोल से थनों को धो दें। सबक्लीनीकल मर्सटिटिस की जाँच के लिए दुध का पी.एच. लिटमस पेपर से देखें। पी.एच. ७ से अधिक होने पर मैमिडियम, मास्टीकील, मैमीअप दवाओं का प्रयोग करें एवं खनिज मिश्रण ५० ग्राम प्रति दिन दें। पशु गृह को हवादार रखें एवं नियमित रूप से साफ सफाई पर विशेष ध्यान दें।
- धान की फसल में पत्ती लपेटक (लीफ फोल्डर) कीट की निगरानी करें। इस कीट के पिल्लू धान के पत्तियों के दोनो किनारों को रेशमी धागे से जोड़कर उसके अन्दर रहते है तथा पत्तियों की हरीत्तिमा को खाता है। इस प्रकार का लक्षण दिखने पर बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराईड दाने-दार दवा का १० किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से व्यवहार करें।
- धान की फसल में ब्राउन प्लांट होपर कीट की निगरानी करें। यह मच्छरनुमा कीट पौधा की पत्तियों एवं तने से रस चुसता है जिससे पत्तिया सुखी हुई तथा भुरे रंग की हो जाती है। प्रारंभ में यह एक स्थान में रहते है जो बाद में सारे खेत में फैल जाते हैं एवं कभी-कभी यह सारी फसल को नष्ट कर देती है। यदि प्रकोप दिखाई दें तो इमिडाक्लोरोप्रिड / ०.३ मी.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर आसमान साफ रहने पर छिड़काव करें।
- फूलगोभी की अगात किस्मों की रोपाई समाप्त करें। बोरान तथा मॉलिब्डेनम तत्व की कमी वाले खेत में १०-१५ किलो ग्राम बोरेक्स तथा १-२ किलोग्राम अमोनियम मालिब्डेट का व्यवहार खेत की तैयारी के समय करे। फुलगोभी की मध्यकालीन किस्में अगहनी, पूसी, पटना मेन, पूसा सिन्थेटिक-१, पूसा शुभ्रा, पूसा शरद, पूसा मेघना, काशी कुवॉरी एवं अर्ली स्नोबॉल किस्मों की बुआई नर्सरी मे गिराये।
- टमाटर की काशी विशेष, काशी अमन, स्वर्ण लालिमा, स्वर्ण नवीन, अर्का आभा किस्मों की नर्सरी उथली क्यारियों में पंक्तियों में गिरावें। सब्जियों की नर्सरी में लाही, सफेद मक्खी व चूसक कीड़ों की निगरानी करें।
- लत्तीदार सब्जियों वाली फसलों में फल मक्खी कीट की निगरानी करे। वर्त्तमान मौसम इस कीट के प्रकोप के लिए अनुकुल है। मादा मक्खी लत्तीदार सब्जियों के कोमल फलों के अन्दर अण्डे देती है। ग्रसित फलों के छेद से लसदार हल्के भूरे रंग का द्रव निकलता है जो सुखने पर खुरदरे खुरट का रुप ले लेता है। अण्डे से मैगोट बनते ही वह गुद्दे को खाकर स्पंज जैसा बहुत सारे छेद कर देता है। जिससे फलों में सड़न प्रारंभ हो जाती है। क्षतिग्रस्त फल पतला टेढ़ा-मेढ़ा, कभी-कभी तो पीले पड़कर डंठल से अलग होकर गिर जाते है। यह मैगोट एक फल को खाने बाद फूदककर दुसरे फल को खाता है। क्षतिग्रस्त फल खाने योग्य नही रहता। कीट नियंत्रण के लिए सर्वप्रथम सभी क्षतिग्रस्त फलों को इकृठा कर नष्ट कर दें। मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग करे। अधिक क्षति होने पर १ किलोंग्राम छोआ एवं २ लीटर मैलाथियान ५० ई०सी० तरल दवा को ८०० से १००० लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से फसल में समान रुप से छिड़काव करे।

आज का अधिकतम तापमानः ३४.६ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से २.१ डिग्री अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः २६.२ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ०.६ डिग्री अधिक

(डॉ० गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी